

रजनीश - भगवान या हैतान?



लेखिका-वीना गुप्ता एम० ए०

प्रकाशक : अमर स्वामी प्रकाशन विभाग

१०५८, विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद-२०१००१ (उ०प्र०)

तीसरा संस्करण नवम्बर २००२ ई०

मूल्य एक रुपया मात्र

॥ ओ३म् ॥

वर्तमान युग में, “सैक्स गुरु” कहे जाने वाले आचार्य रजनीश का नाम जिन्हा पर आते ही उनसे मिलने तथा उनके “रजनीश आश्रम” को देखने की लालसा स्वतः ही मन में उठने लगती है।

उनके दर्शन करने के लिए आपको अधिक कष्ट नहीं उठाना पड़ेगा, पूना शहर के सुदूर इलाके में जब आप सड़क पर चलते-२ नौजवान सन्यासी स्त्री-पुरुष एक दूसरे को चूमते, चाटते आपस में सैक्स की अठखेलियां करते नजर आयें तो आप समझ लें, कि वह जगह कहीं दूर नहीं जिसकी आपको तलाश है। जो आज विश्व का खुल्लम-खुल्ला सैक्स का केन्द्र माना जा चुका है। यह केन्द्र ६ एकड़ भूमि पर कोरे गांव में स्थित है जिसके व्यवस्थापक श्री रजनीश जी हैं। इस आश्रम में पांच सौ सन्यासी स्थायी रूप से रहते हैं। जो आश्रम की देख रेख एवं उसकी व्यवस्था को सम्भालते हैं। लगभग १६०० सन्यासी, आश्रम से बाहर रहते हैं, जो रोज सुबह आकर शाम को चले जाते हैं, ये सभी सन्यासी आश्रम के सम्पूर्ण क्रिया कलापों में भाग लेते हैं। इनके एक बार आश्रम में प्रवेश पा जाने पर ये कुछ भी करने को स्वतन्त्र हैं। आश्रम में हर चीज की सुविधा है। वहां पर सैक्स (कामवासना) की तृप्ति के साथ-साथ धूम्रपान तक की पूर्ण व्यवस्था प्राप्त होती है। अब आप इस बीसवीं सदी के भगवान कहे जाने वाले श्री आचार्य रजनीश के जीवन पर भी एक नजर डालिए।

अनादि काल से ऋषियों, मुनियों, चिन्तकों एवं विचारकों, सन्तों तथा दार्शनिकों को जन्म देने वाली इस भारत की पुण्य भूमि पर ही इसके प्रान्त मध्य प्रदेश में जबलपुर से सवा सौ मील दूर एक कस्बा स्थित है जो “गाडरवारा” नाम से पुकारा जाता है, इसी छोटे से कस्बे के अन्दर सन् १९३१ ई० में एक जैन परिवार में आचार्य रजनीश का जन्म हुआ, इनका

बचपन का नाम “राजेन्द्र” था, गाडरवारा के माध्यमिक स्कूली जीवन राजेन्द्र जी का किसी फिल्मी कथानक से कम दिलचस्प नहीं है इस माध्यमिक स्कूल में सह शिक्षा थी, जब राजेन्द्र नौवी कक्षा में पढ़ रहे थे, तो वहां के एक पशु चिकित्सक डाक्टर शरनदास शर्मा की पुत्री जिसका नाम “शशी” था, ने भी दाखिला ले लिया, और किसी फिल्मी हीरो की तरह राजेन्द्र (शशी) को पहली नजर में ही अपना दिल दे बैठे और इन दोनों का प्यार का जीवन आरम्भ हो गया, इसी बीच फिल्मों की तरह ही इन दोनों के मध्य एक कालू नाम का व्यक्ति भी विलन बन कर कूद पड़ा। यह डाक्टर चौपड़ा का लड़का था, और इस प्रकार बम्बइया फार्मूला फिल्मों की तरह राजेन्द्र, शशी और कालू को लेकर एक त्रिकोण बन गया। और इन दोनों को वह लड़की प्रेम का नाटक खेलकर बेवकूफ बनाती रही, यहां तक भी नौबत पहुंच गयी कि दोनों के कई बार सिर भी फड़वा दिये शायद यह त्रिकोणात्मक कहानी आगे भी चलती, लेकिन अचानक १९५१ में इस नाटक का आकस्मिक पटाक्षेप हो गया, शशी अचानक बीमार हुई और दो चार दिन बीमार रह कर इस दुनियाँ से सदा के लिये उठ गयी। शशी की आकस्मिक मृत्यु से किशोर राजेन्द्र को बड़ा आघात पहुंचा, वह पागलों की तरह इधर उधर घूमता रहता, इस दशा को देखते हुए पता चलता है कि वह शशी को अत्याधिक प्यार करता था, गाडरवारा में माध्यमिक शिक्षा के बाद उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु, राजेन्द्र को जबलपुर जाना पड़ा, वहां पर उन्होंने अपने नाम को भी अपनी प्रेमिका के साथ जोड़ दिया, और उन्होंने राजेन्द्र की जगह “रजनीश चन्द्र मोहन” रख लिया, जो शशी का पर्यायवाची भी था, जो आगे चल कर केवल “रजनीश” ही रह गया।

सन् १९५२ ई० में “रजनीश चन्द्र मोहन” ने हितकारिणी महाविद्यालय में दाखिला ले लिया। यहाँ आकर उसका सम्पूर्ण जीवन ही बदल गया, उसका मन सांसारिक जीवन से हट कर दर्शन शास्त्रों की ओर लग गया, और उन्होंने दर्शन शास्त्रों का अध्ययन करने का निश्चय कर लिया, रजनीश में प्रारम्भ से ही “अहम” की बड़ी प्रबल भावना थी, जिसका प्रमाण उनके विद्यार्थी जीवन में “श्री एस० एन० एल० श्रीवास्तव” जो दर्शन के प्राध्यापक

थे) उनके झगड़े का होते रहना, उन्हें ज्ञान शुन्य बताना, प्रिंसिपल परांजपे से झगड़ा एवं अक्खड़पन से पेश आना था। आज भी उनके भाषणों, लेखों एवं पुस्तकों में अहम् स्पष्ट दिखाई देता है। रजनीश की आर्थिक दशा बड़ी शोचनीय थी उनको उनके रिश्तेदारों ने बड़ी मदद की, जैसे-तैसे सागर विश्वविद्यालय से एम० ए० की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की, पश्चात् रायपुर के दूधाधारी संस्कृत महाविद्यालय में दर्शन शास्त्र के प्राध्यापक का पद मिल गया, रजनीश ने हितकारिणी महाविद्यालय से ही दार्शनिकों जैसी वेश-भूषा, अपना ली थी, सिर व दाढ़ी के बाल बढ़ा लिए थे। अतः यहां पर उन्होंने अपने नाम के साथ आचार्य लगाना आरम्भ कर दिया, परिणाम स्वरूप उन्हें “आचार्य रजनीश” कहना आरम्भ हो गया था। परन्तु उनके “अहम्” भाव के कारण इतने से ही उनको सन्तुष्टी नहीं थी, उनको वाद विवाद प्रतियोगिताओं में भाग लेते रहने के कारण व्याख्यान देने का अच्छा-खासा अभ्यास हो गया था, परन्तु “अहम्” की महत्वाकांक्षा के कारण वह अपने आपको सबसे अलग तथा सबसे ऊँचा रखने का प्रयत्न करते थे, यह आकांक्षा उनकी इस हद तक बढ़ गयी थी कि वह मनुष्य मात्र से भी अपने आपको ऊँचा मानने लगे, यहीं से मानव के स्थान पर “भगवान” बनने की प्रक्रिया का सूत्रपात हुआ। उन्होंने अपने आपको “अवतार” सिद्ध करने के भी अनेकों हथकण्डे अपनाये परन्तु वह सफल नहीं हुए अतः नौकरी से त्याग-पत्र दे, जबलपुर में आकर तान्त्रिक विद्या में लग गये, सारी सारी रात सड़कों पर नंगे घूमते रहते। इससे वह एक अच्छी खासी चर्चा के विषय बन गये ! अतः उनको जबलपुर में ही रहने के लिए “योगेश भवन” का स्थान मिल गया, यहीं पर रजनीश जी अपना साधना शिविर चलाते थे। जबलपुर में अनेकों जैनी व्यक्ति इनके शिष्य बन गये थे। शिविरों में रजनीश जी ने योग और सैक्स पर प्रवचन देना आरम्भ कर दिया था इनके प्रभाव को देखकर उनके एक मित्र श्री रतन प्रकाश ने उन्हें सलाह दी कि इन प्रवचनों को पुस्तक रूप में प्रकाशित किया जाए। रजनीश को मित्र की यह सलाह जँच गई और उन्होंने इन प्रवचनों को पुस्तक के रूप में प्रकाशित करा दिया और इन प्रवचनों के संग्रह का नाम

“सम्भोग से समाधि की ओर” रक्खा गया, इस टाइटल ने नवयुवकों को अपनी ओर खींचा, और इस पुस्तक की बेशुमार बिक्री हुई। रजनीश जी अनेकों काम कुण्ठाओं से ग्रसित थे। जो सब कुछ इस पुस्तक में उगल गये। रजनीश की सभी पुस्तकों की अपेक्षा इस पुस्तक को सर्वाधिक प्रसिद्धि मिली। इस पुस्तक के प्रकाशन ने उनको इतना प्रोत्साहित किया कि अब तक उनके सौ से अधिक प्रकाशन निकल चुके हैं। रजनीश जी जिस “योगेश भवन” में रहते थे, वहीं के उस मकान के मालिक लक्ष्मी चन्द जैन समैया के नाम से विख्यात थे, उनकी पत्नी पर डोरे डालने आरम्भ कर दिये। और यह इशारे बाजी काफी हद तक पहुँच गयी लोगों में चर्चा का विषय बन गया, इस बदनामी से तंग आकर लक्ष्मीचन्द समैया ने मकान खाली करा लिया, तथा रजनीश को दी जाने वाली सुख-सुविधाओं को बन्द कर दिया। रजनीश ने एकान्त में बैठ कर चिन्तन किया कि किस प्रकार मैं अपने विचारों का प्रचार एवं प्रसार करूँ मैं किस प्रकार भगवान की उपाधि प्राप्त कर सकता हूँ ? किस प्रकार मेरे पास अप्सराओं का निवास हो?

इसी चिन्ता में डूबे-डूबे लगभग एक माह बीत गया अचानक रजनीश जी की पुस्तक एक बम्बई के सेठ के हाथ लग गयी और इस पुस्तक से प्रभावित होकर पत्नी सहित जबलपुर रजनीश से मिलने चला आया। इन दिनों शिविर यत्र-तत्र जहाँ प्रबन्ध उनके शिष्यों द्वारा हो जाता था शिविर लगते रहते थे। रजनीश की लम्बी दाढ़ी, सिर के लम्बे (बाल) केश, मोहक आँखे, आकर्षित चेहरे ने सेठ की बीवी का मन मोह लिया, बीवी के कहने पर सेठ ने रजनीश से बम्बई चलने की प्रार्थना की, तो रजनीश ने सहर्ष स्वीकार कर लिया, “अन्धे को क्या चाहिए ? दो आँखे”। वैसे रजनीश ने पहले आबू का निश्चय किया था, परन्तु यहां तो बना-बनाया प्रोग्राम फिर सैट हो गया, घर बैठे भगवान की कृपा हो गयी सारी सुविधा, निवास, भोजन, शिविरों की सुविधा का जिम्मा सेठ ने लिया था। अतः रजनीश ने बम्बई हावड़ा मेल से बम्बई जाने की तैयारी कर ली थी। स्टेशन पर बिदायी के समय गिनती के ५-७ जैन समाज के युवक जो रजनीश के भक्त थे, उपस्थित थे। क्योंकि उनके सैक्स वाद को यहां पर लोगों ने कोई महत्व

नहीं दिया था। और उन शिष्यों से बिदायी लेते हुए आचार्य रजनीश जी भगवान रजनीश बनने की आकांक्षा लिए हुए गाड़ी में चढ़ गये। बम्बई पहुंच कर रजनीश को एक अच्छा बड़ा मकान सेठ व सेठानी की वजह से पूर्ण सुविधाओं सहित प्राप्त हो गया, तथा उनके नये-नये शिष्य तैयार होने लगे रजनीश ने उनको अपने खेल के मोहरे बनाये और उनके कपड़े रंग कर उन्हें “हरे रामा हरे कृष्णा” का कीर्तन करने की प्रेरणा दी, उससे जो विदेशी हिप्पी-बम्बई में आते थे, वह बड़े प्रभावित हुए और वे सब के सब रजनीश के भक्त बन गये। रजनीश जो चाहता था, वह सम्भव होने लगा दूसरा पासा रजनीश ने ये फैका कि “नियो सन्यास इन्टर नैशनल” के नाम से एक नई संस्था खड़ी की, इसमें गृहस्थ रहते हुए भी व्यक्ति सन्यासी बन सकता था, तथा अपने साथी आनन्द को जबलपुर से बुलवा कर जादुगरी का खेल दिखलाये, अनेकों पत्रकारों को शराब आदि पिला-पिला कर उनसे समाचार-पत्रों में अपनी बड़ाई कराना ये सब हथकण्डे रजनीश को भगवान बनाने में सहायक सिद्ध हुए। इसका परिणाम यह निकला कि, रजनीश पर

धन की वर्षा होने लगी, पुस्तकों के प्रकाशन का कार्य उच्च स्तर पर तेजी से होने लगा। चारों तरफ भगवानजी की जय-जयकर के गीत गाये जाने लगे। अब रजनीश ने अपने प्रचार को अधिक बढ़ाने के लिए सिनेमा जगत की शरण ली सिनेमा जगत के अभिनेता तथा अभिनेत्रियों को सैक्स और योग द्वारा अपने जाल फंसाया, जिनमें मुख्य प्रेमनाथ, विजय आनन्द उर्फ गोल्डी तथा विनोद खन्ना हैं, यह तक कि जहां भगवान जी रहते थे, जिनके द्वारा विशेष कृपा हुई थी, उन सेठ जी की सेठानी को फंसा लिया, अब सेठ जी मुंह ताकते रह गए, सेठानी सेठ को दुलत्ती मार कर रजनीश के प्रेम में फंस गयी, परिणाम यह निकला कि, भगवान जी से सेठ जी को अपना घर कराना पड़ा। मजबूरन भगवान जी बम्बई से १९२ किलामीटर दूर पूना के कोरे गाँव पार्क में जमीन खरीद कर वहाँ आश्रम बनाकर रहने लगे।

वहां रजनीश जी ने अपने शिष्यों सहित नंगा रहना आरम्भ कर दिया,

और कहने लगे कि यह तान्त्रिक प्रयोग है, इसका परिणाम यह हुआ कि युवक-युवतियों के प्रवेश की लाइन लग गयी, सम्भोग के नये-नये तरीके भगवान जी बताने लगे, लच्छेदार भाषा में भाषण देकर लोगों को फँसाना आरम्भ कर दिया, उनकी लच्छेदार भाषा के कुछ नमूने देखिए -

“ संयमी आदमी बड़े खतरनाक होते हैं, क्योंकि उनके अन्दर काम का ज्वालामुखी उबल रहा होता है। ऊपर से तो वह संयम साधे हुए होते हैं, उनके भीतर असंयम की आग उबल रही होती है। जितना सधा हुआ सन्त होगा, उतना ही खतरनाक होता है।”

इतना ही नहीं रजनीश ने और भी कमाल का लिखा है -

“ काम दिव्य है, डिवाइन है, सैक्स की शक्ति परमात्मा की शक्ति है बल्कि शक्ति सम्भोग का आनन्द ही परमात्मा के मिलने का आनन्द है।”

वाह ! वाह !! जिस देश में ऐसे ज्ञानी, ध्यानी भगवान पैदा हों उस देश का भविष्य क्या बनेगा ? ये तो पाठक स्वयं ही विचार करें !

भगवान जी अपने प्रवचनों में कहते हैं कि - “जब मेरी मुलाकात वैश्याओं से होती है तो, वह परमात्मा के मिलने अर्थात् धर्म की बातें करती है, तथा जब मैं महात्माओं से मिलता हूँ तो वह सैक्स की बातें करते हैं।”

लगता है, भगवान जी को सारे अनुभव प्राप्त है और ये इस प्रकार की बनावटी बातें कर-कर के लोगों को अपने जाल में फँसाते हैं, सन १९४९ ई० के १९ मार्च को जन्मी एक जर्मनी युवती जो ‘फ्रैंकफुर्ट’ की निवासी थी, को भगवान ने अपने चंगुल फँसाकर उसका नाम “ माँ योग विवेक ” रख कर अपनी पत्नी के रूप में रख लिया, भगवान जी के किसी शिष्य को यह अधिकार नहीं है कि बिना बुलाये उनके कक्ष (कमरे) या बैडरूम में जा सके, और उनके साथ रात व्यतीत कर सके यह केवल भगवान की माता जी को ही है। कहिये इस ऋषि-मुनियों की पावन भूमि का क्या होगा ? जहाँ पर गौतम, कणाद और पाणिनि जैसे ऋषियों ने उपदेश विदेशों को

प्रभावित करते थे जहां संयम और ब्रह्मचर्य के बल पर योगाभ्यास द्वारा परमेश्वर के है। जहां पर दूध को परम पावन पेय माना जाता था वहां शराब व चरस, भांग, आदि नशीले पदार्थों को प्राथमिकता दी जाती है।

पाठक स्वयं पढ़ें, विचारें, देखें तथा समझें। अगर मेरे कथन में कोई झूठ नहीं है, तो इस प्रकार के भगवानों को जल्दी से जल्दी देश से भगावें, ताकि देश की प्राचीन संस्कृति, सभ्यता जिन्दा रह सके। जिसके आगे सारा विश्व नतमस्तक होता था। रजनीश जी के अपने एक निकट सम्बन्धी के विचार रजनीश के बारे में पढ़ने लायक है, आप भी एक नजर देखिये -

“सैक्सवाद के सम्बन्ध में रजनीश की विचार धारा उनके विभिन्न प्रकार के प्रयोगादि ऐसी बातें हैं” जिन्हें कोशिश करने पर भी स्वीकार कर पाना कठिन है, रजनीश जिस उन्मुक्त सैक्स की वकालत करते हैं यदि वह सम्पूर्ण विश्व में फैल गया तो न बाप बेटी का रिश्ता रह पायेगा न परिवारिक और सामाजिक सम्बन्ध ही रह पायेंगे, भाई-बहन का पवित्र रिश्ता एक स्वप्न बन कर रह जायेगा, मानव जाति की सम्पूर्ण सभ्यता तथा संस्कृति नष्ट हो जायेगी मानव फिर उसी आदिम युग में पहुँच जायेगा जब न कोई धर्म था न कोई सभ्यता थी न कोई संस्कृति, जब मानव व पशु में कोई अन्तर न था।

“घासी राम सैमेया”

(जबलपुर निवासी)

मैंने यह संक्षिप्त से विचार अपनी जानकारी के आधार पर लिखे है पाठक सोचें। विचारें।। तथा अपना ठीक मार्ग दर्शन करें।।

जब भारत में भगवान जी के सैक्स व्यापार में बाधाएं पड़ने लगीं तो उन्होंने अपना अड्डा विदेश में स्थापित कर लिया, जहां रहकर भगवान जी सारे विश्व पर छा जाना चाहते हैं। भारतीय जनता सावधान रहे।

